सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति

श्रवण एवं सिद्धार्थ सदन की सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज दिनांक 20 अप्रैल 2018 शुक्रवार को हमारे विद्यालय में श्रवण एवं सिद्धार्थ सदन की सम्मिलित प्रस्तुति हुई। जिसमें कक्षा पाँचवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यालय के बाहरी सभागार में सभी विद्यार्थी एकत्रित हुए। एक मिनट के मौन के बाद सरस्वती वंदना से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुपरिचित रंगकर्मी रिज़वाना परवीन थीं।

कार्यक्रम के आरंभ में श्रीगणेश आराधना पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। भारतनाट्यम एवं कथक के सम्मिलित नृत्य ने सबका मन मोह लिया। आधुनिक सुरों पर भारतीय नृत्यों को देखना, एक अद्भुत अनुभव था। नृत्य के बाद ऑर्केस्ट्रा का आयोजन हुआ। तबले को सुनकर सबका मन हर्षोल्लास से भर गया। मधुर संगीत ने सबका मन मोह लिया। आखिर में तबले के ताल ने सबके हाथ-पाँव को थिरकने के लिए मजबूर कर दिया। कार्यक्रम का मुख्य विषय 'मन की कसौटी' था। आगे अष्टावक्र नाटक की प्रस्तुति हुई। इस नाटक में ऐसे अपंग व्यक्तियों के लिए प्रेरणा दी गई है जो लोग तन से अपंग हैं। क्या वो मन से भी अपंग है? यह बड़ा सवाल इस नाटक का केंद्रीय विचार बिंदु था।

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्

यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम्।

इस श्लोक के साथ, उन लोगों को प्रेरणा दी गई है कि भले ही वह तन से अपंग हो, पर मन से अपंग नहीं। इस नाट्क में एक अहंकारी पिता के द्वारा श्रापित अष्टावक्र के जीवन का नाट्य रूपांतरण किया गया। वह आठ जगहों से वक्र था। वह अपने पिता के प्रतिशोध के लिए लड़ता है। आखिर में अपंग लोगों का एक पूरा इंसान पर हँसना मन पर छाप छोड़ जाता है, कि तन से अपंग, मन से अपंग नहीं होते। बल्कि वह खास हैं, क्योंकि वह असाधारण हैं। फिर 'हर सुबह है नयी, तू कर ले यकीन' का गायन हुआ। इस गाती प्रत्येक हारे हुए मन को साहस देता हैं, उसके जीतने के लिए अनवरत हौंसला देता है। इस मधुर संगीत ने सबका मन मोह लिया। इस गाने ने सबके भीतर उम्मीद की लौ जला दी। आदमी अपनी किस्मत खुद लिखता है। इसी सोच पर आधारित 'दिल यह जिद्दी' पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस नृत्य पर सबने कभी न हार मानना एवं अपने पथ पर अडिग होकर चलने की प्रेरणा ली। इसके बाद हमारी मुख्य अथिति ने इस कार्यक्रम पर कुछ शब्द बोले। इस कार्यक्रम के माध्यम से वह कहती है कि उन्हें उनका बचपन याद आ गया। हमारी आदरणीय प्रधानाचार्या ने इस कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने अष्टावक्र की अहमियत एवं महत्त्व के बारे में बताया। उन्होंने बच्चों की प्रशंसा की एवं उनके शुभकामनाएँ दी।

आयूष यादव एस वन- ए

कस्तूरबा और भरत सदन की सांस्कृतिक प्रस्तुति

हमारे विद्यालय का सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष बहुत ही सुंदर ढंग से मनाया जाता है। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रत्येक हाउस अपनी विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों द्वारा अलग-अलग शिक्षा एवं संदेश देते हैं। सभी बच्चे इसे बहुत चाव से देखते हैं। प्रत्येक वर्ष ज्ञानभारती स्कूल के बच्चे कुछ ऐसा कर दिखाते हैं कि वह हमारे हृदय व स्मृति पटल पर बस जाते हैं। इस बार भी दिनांक 17 जुलाई को कस्तूरबा और भरत हाउस के बच्चों ने अपने विविध कार्यक्रम द्वारा कई बेहतरीन सीख हमें दी।

हमेशा की तरह कार्यक्रम के आरंभ में बच्चों ने कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रिज़वाना परवीन जी को एक खूबसूरत सा पौधा देकर सम्मानित किया व उनका हृदय से स्वागत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत नृत्य से किया गया। भरतनाट्यम, ओडिसी और कथक जैसी खूबसूरत नृत्य कलाओं को मिलाकर एक सुंदर मनोहर नृत्य तैयार किया गया। नृत्य को मनोहर कर देने वाला गाना भी कर्ण प्रिय था। इसका शीर्षक था मनोहर मूर्ति। इस सम्मिलित नृत्य को प्रदर्शित करते हुए बच्चों ने नृत्यकला के सौंदर्य को अपनी पूरी बहुविद्य भंगिमा में प्रस्तुत किया।

अगला कार्यक्रम ऑकेस्ट्रा का था। इसमें कैसियो, ड्रम, गिटार, तबला और डफली का भी इस्तेमाल बच्चों ने बहुत खूबसूरती से किया। जिससे उनकी प्रदर्शनी और भी बेहतरीन हो गई। इनकी प्रस्तुति ने सभी दर्शकों का मन मोह लिया। इसके पश्चात बच्चों ने अपनी मधुर आवाज़ में एक शानदार गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे- 'गम की बदली में चमकता एक सितारा है, आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।' बच्चों ने काफी डूब कर यह गीत गया। इनके मीठे स्वर दर्शकों को बांधे रखा। सभी दर्शक भावविभोर हो कर गीत सुन रहे थे।

इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की सबसे शानदार प्रस्तुति लघु नाटिका थी। जो कि हमारे पौराणिक कथाओं पर आधारित थी। इस लघु नाटिका का शीर्षक था- नन्हा सबल अटल ध्रुव तारा। इस नाटक में बच्चों की प्रस्तुति इतनी प्रभावशाली थी कि दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देख रहे थे। नाटक के सभी पात्रों ने काफी डूबकर अपने किरदार को प्रस्तुत किया। इस नाटक को देखने के पश्चात हमें यह शिक्षा मिलती है कि पाने की कोई उम्र या सीमा नहीं होती। इंसान में सच्ची लगन एवं मेहनत होनी चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में एक सम्मिलित नृत्य की प्रस्तुति हुई जिसके बोल थे- कुछ पर्वत हिलाये। इस नृत्य के प्रत्येक स्टेप पर बच्चों ने काफी बेहतरीन ताल-मेल बैठाया। जिससे यह काफी रोचक एवं मजेदार बन सका। इतनी खूबसूरत सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिए कस्तूरबा एवं भरत हाउस के सभी विद्यार्थी बधाई एवं प्रशंसा के पात्र है।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की प्रचार्या ने पूरी सभागार को संबोधित किया। उन्होंने बालक ध्रुव की कथा की संक्षिप्त चर्चा की। इस शानदार कार्यक्रम के लिए सभी को बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। राष्ट्रगान के साथ नियमित कक्षाएँ आरंभ हुई।

मिताली एम-3 बी

लक्ष्माबाई तथा प्रहलाद सदन की सांस्कृतिक प्रस्तुति

हमारे विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत आज लक्ष्मीबाई एवं प्रहलाद सदन की प्रस्तुति थी। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रिज़वाना परवीन थी। रिज़वाना जी एक प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं मशहूर सितार वादक है। इस कार्यक्रम की शुरूआत एक नृत्य से हुई जिसमें भगवान श्रीकृष्ण को दर्शाया गया। श्रीकृष्ण विष्णु भगवान के आठवें अवतार माने जाते हैं। गाने का बोल था- नमो नारायण। नृत्य की भंगिमाएँ थी- भरतनाट्यम, कथक एवं ओडिसी। नृत्य की प्रस्तुति बहुत ही शानदार एवं आनंददायक थी। विद्यार्थियों ने कार्यक्रम की अलगी प्रस्तुति तबला, कैसियो, सिंथेसाईज़र, वॉयलिन व गिटार के साथ किया। अगला कार्यक्रम एक भक्तिमय गीत था। जिसे बच्चों ने अपनी प्रस्तुति द्वारा और भी सुंदर एवं मनमोहक बना दिया। गाने के बोल थे- 'जीवन तुमने दिया है, संभालोगे तुम....।'

कार्यक्रम की अलगी प्रस्तुति पौराणिक कथाओं पर आधारित एक नाटक था। जिसका केंद्रीय चरित्र नचिकेता था। भारतीय पौराणिक कथा परंपरा में नचिकेता एक ऐसा बालक था, जिसने अपने पिता की आज्ञा के अनुसार खुद को मौत के देवता यमराज के हाथों में सौप दिया था। उस बालक ने मौत का रहस्य जीवित रहते ही जान लिया था। उसने धन जैसी चीज़ को नहीं चुना चूँकि उसे इस सत्य का ज्ञान था कि धन एक न एक दिन समाप्त हो जायेगा। परंतु ज्ञान हमारे साथ रहेगा। अंत में एक नृत्य था। जिसके बोल थे- 'यह हौसला, जो दर्शाता है कि कोई चीज़ नामुमकिन नहीं।'

सत्य निष्ठा और भगवान में आस्था रखने से सब कुछ प्राप्त करना आसान हो जाता है। हम अक्सर बहुत मेहनत करते हैं, लेकिन यदि हमें शीघ्र ही फल प्राप्त न हो तो हम अपना आपा खो बैठते हैं। हमें यह नहीं करना चाहिए। क्योंकि यदि आप पूरे लगन एवं ध्यान से भगवान में आस्था रखकर काम करते हैं तो हमें इसका सुखद परिणाम अवश्य प्राप्त होता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें जीवन की कई महत्त्वपूर्ण शिक्षा मिलती है। कई सारी बातें जो आम जीवन से जुड़ी होती है। उसका ज्ञान भी इस कार्यक्रम के माध्यम से होता है।

कार्यक्रम के अंत में मुख्यअतिथि का वक्तव्य तथा विद्यालय की प्रचार्या का संबोधन हुआ। हमारी प्रचार्या ने कार्यक्रम की काफी तारीफ की। तथा इस शानदार कार्यक्रम के लिए सदन के सभी विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामानाएँ दी। राष्ट्रगान के पश्चात हमारी नियमित कक्षाएँ शुरू हुई।

साहिबा राठी एम-3 बी

ध्रुव एवं अभिमन्यु सदन की प्रस्तुति

इस साल ज्ञानभारती के बच्चों ने अपने-अपने सदन के लिए बहुत ही मनोरंजन एवं ज्ञानपूर्ण सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। इनसे हमें भिन्न-भिन्न संदेश एवं प्रेरणा मिलती है। ऐसी ही एक शानदार सांस्कृतिक प्ररस्तुति थी ध्रुव एवं अभिमन्यु सदन की।

कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि रिज़वाना परवीन जी के स्वागत से हुई। इसके बाद सदन की कुछ छात्राओं द्वारा कथक, भरतनाट्यम एवं ओडिसी नृत्य की एक संयुक्त प्रस्तुति हुई। इस अद्भुत नृत्य ने हम सभी को एक खास निरवता में पहुँचा दिया। ऐसे ही शाँतिमय एवं सौम्य वातावरण में कार्यक्रम की शुरूआत हुई, जिसने दर्शकों को पूरी तन्मयता से बांधे रखा।

कार्यक्रम की अलगी प्रस्तुति ऑर्केस्ट्रा की थी। इसमें सिंथेसाईज़र, गिटार, तबला आदि के प्रयोग से बच्चों ने बहुत ही आनंददायक प्रस्तुति दी। अगला कार्यक्रम कोरस गायन का था। जिसे सुनकर श्रोता मुग्ध हो गये। कार्यकर्म की अगली प्रस्तति लघु नाटिका की थी। नाटक भारतीय पौराणिक स्त्री पात्र शकुंतला पर आधारित था। शकुंतला भारतीय स्त्री समाज की प्रतिनिधि चरित्र है, जो स्त्री त्याग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। इस प्रकार के नाट्क हमारे इतिहास की पौराणिक कथाओं एवं उससे निकलने वाली शिक्षा से हमें अवगत कराते हैं। इस नाटक में भी पुराने समय के राजाओं एवं स्त्रियों की स्थिति का चित्रण मिलता है। पुरुष द्वारा स्त्री को इसलिए परेशान या अपमानित न किया जाये क्योंकि वह स्त्री है। यह नाटक हमें स्त्री चेतना की गंभीर शिक्षा देता है।

अगले कार्यक्रम के रूप में सम्मिलित नृत्य प्रस्तुति थी। इस प्रकार के अंत अत्यंत मज़ेदार लगते हैं। कार्यक्रम देखने के बाद मानो जान में जान आ गई। ऐसा लगा की थकान के बाद भी इंसान बहुत कुछ कर सकता है। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की प्रचार्या ने सदन के सभी विद्यार्थियों को बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। इस प्रकार ध्रुव एवं अभिमन्यु सदन की सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति काफी रोचक, आनंददायक एवं ज्ञानवर्धक थी।

निरानंदा ज़िंदल एम-3 डी

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम

हमारा देश भारत सन् 1947 में आज़ाद हुआ था। हमारे देश को आज़ाद हुए 71 साल हो गए हैं। इस यादगार दिन को और ख़ास बनाने के लिए हमारे विद्यालय में एक विशेष सांस्कतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जो कि हमारे विद्यालय में प्रत्येक वर्ष होता है। इस कार्यक्रम की शुरूआत हमारे विद्यालय की प्रार्थना से हुई। इसके बाद दो विद्यार्थियों ने मधुर गीत गाये। एक गीत भारतीय वाद्ययंत्र के साथ तो दूसरा पाश्चात्य वाद्ययंत्र के साथ था। इसके बाद कुछ छात्राओं की सम्मिलित नृत्य प्रस्तुति हुई। इसके पश्चात कुछ विद्यार्थियों ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। जिसका संदेश हमारी आज़ादी से जुड़ा हुआ था। कार्यक्रम का अंत एक सुंदर नृत्य से हुआ। विद्यालय की प्रचार्या ने बच्चों के प्रयास की काफी प्रशंसा की। इस कार्यक्रम का मकसद दर्शकों तक आज़ादी के महत्त्व को पहुँचाना था। हम सभी अपनी मातृभूमि की आज़ादी एवं रक्षा में शहीद हुए सेनानियों की बहादुरी को याद करते हुए उन्हें सलाम करते हैं।

अनुष्का एवं जसलीन एम-2 सी

1. परीक्षा

मैं बैठा था, अशोक का इतिहास पढ़ने।

मन में डर था, दिल लगा जोर-जोर से धड़कने।

आखिर आने वाला था, पाँच नम्बर का सवाल!

क्या वह मचाने वाला था, मेरे मन में बवाल!

इन प्रश्नों का उत्तर तो मिल पाया।

तो मैंने अपनी किताब का एक पन्ना और आगे बढ़ाया।

लेकिन बार-बार परीक्षा के डर ने मुझे सताया।

इसलिए तो मैं कुछ भी समझ न पाया।

फिर मैंने थोड़ी हिम्मत दिखाई,

माँ से कहा, नहीं आ रही समझ मुझे यह इतिहास की पढ़ाई।

लेकिन माँ कुछ भी समझ न पाई।

उन्होंने फिर वही किताब मेरी हाथ में पकड़ाई।

मैं था डरा और सहमा हुआ सा...

परीक्षा भवन में पहुँचकर, उन प्रश्नों को याद करने पर तुला हुआ था।

थोड़ी ही देर बाद परीक्षा की घंटी बजी,

मैंने सोचा क्या रह गई मेरी पढ़ाई में कोई कमी!

थोड़ी ही देर में मास्टर जी मेरी हाथों में पेपर थमा गए।

प्रश्नों को पढ़ने के बाद मैं बिलकुल नहीं डरा,

विचार आया कि यह कैसा जादू मेरे मन में चला।

मैंने सारे प्रश्न यूँ ही हल कर डाले,

मुझे लगने लगा कि...मैं ही हूँ इतिहास में टॉप करने वाला।

आखिर में परीक्षा भवन से बाहर निकला,

मन में था उल्लास, मैंने डर को दी थी मात।

पर मैं फिर भी एक ही बात कहूँगा...

हाय रे परीक्षा.... हाय रे परीक्षा....।

2. सुहानी भूमि

इस सुहानी भूमि पर, मैं पहली बार जब आया था।

धरती जो सुनी सी थी, उसपर डाला मैंने अपना साया था।

दिमाग नाम का उपहार लेकर, था मैं आया यहाँ।

मैं ही तो हूँ जिसने दुनिया को आगे बढ़ाया।

मैंने पहाड़ों पर जाकर अपना झंड़ा लहराया था

मैंने चाँद पर जाने की खोजकर मनोबल दर्शाया था।

मैंने जो ठाना वह कर के दिखाया था।

पहिये से लेकर बुलेट ट्रेन, मैंने सबकी बात कहलाई

पर अगर बात न सुनी, तो मैंने की भी लडाई।

बाद में मुझे कुछ बाते समझ में आई,

मैंने अपने आप ही इस प्रकृति में आग लगाई।

इस विज्ञान की वजह से मैंने, उन पेड़ों की बली चढ़ाई।

यह तो नहीं करना था

मुझे यह बात बहुत देर से समझ में आई।

3. ऊँचाई

मैं कभी वो था, जो हमेशा ऊँचा बनना चाहता था

मैं भी औरों की तरह अपनी पहचान बनाना चाहता था।

मैं भी हर आदमी से झूठा सम्मान पाना चाहता था

मैं भी कभी वह था जो लालच में डूबे रहना चाहता था।

एक दिन मैं बड़ा बनकर लौट आया

मैंने हर जगह अपनी शान का मोह दर्शाया

पर मैं जो चाहता था, मुझे वो न मिला,

मैंने बस अपनो का प्रेम खोया हुआ पाया।

मैं कहा से कहा तक आ पहुँचा,

आसमान को छू गया पर फर्श पर अपने पैरों को न पाया।

इतनी ऊँचाई का फल मुझे आज समझ में आया।

4. दिल्ली मैट्रो

एक दिन मैं रोज की तरह,

मैट्रो स्टेशन पर था जा रहा।

स्कूल हुआ था खत्म, दिन तो कटा जैसे-तैसे

पर याद आया की कार्ड में नहीं थे पैसे

लाईन में लगा नोटबंदी की याद आई,

क्या लोगों के कार्ड में किसी ने आग लगाई।

तीन मैट्रो गवा दी थी मैंने,

आखिर, मेरा नंबर तब आया।

तो मैंने झटपट अपना कार्ड भरवाया।

पर नइया न लगी मेरी पार,

क्योंकि गिटार रह गया दूसरे द्वार।

मैं फिर भागा था डरा सा सहमा सा,

आखिर मिल गया गिटार, जो उस वक्त मेरा गहना था।

फिर लाईन में लगकर मैं लोगों के धक्के खाता रहा,

और करता भी क्या, गर्मी में सिर खपाता रहा।

मैट्रो खड़ी थी गेट खुले थे,

इरादे मेरे खूब मिले थे।

फिर सहसा मुझे एक बात याद आई,

दिमाग ने मुझे माँ की याद दिलाई।

आज तो रुकना था स्कूल में,

रिसेपश्न के उस ठंड़े ए.सी कूल में।

मैं भागा, स्टेशन से दूर

थक के शरीर हो गया था चूर-चूर।

थोड़ी ही देर बाद मुझे गाड़ी मिली,

आखिर इंतजार खत्म चहरे पर खुशी दिखी।

सुकून से अब मैं घर चल दिया,

सोच रहा था, यह मैंने क्या किया।

अब न करूँगा यह गलती बार-बार

क्योंकि मैंने मैट्रो गवा दी थी चार बार।

अक्षत श्रीवास्तव एम-3 डी